Inter disciplinary approach to the study of pol. scie.

(1) रा० वि० का अन्य शास्त्रों के साथ सम्बन्ध –

प्लेटो और अरस्तू के विचारों में अन्तर अनुशासनीय दृष्टिकोण का आभास मिलता है लेकिन इसका नए ढंग से विकास 20 वीं सदी में हुआ। विद्वानों का मत है कि राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, नीतिशास्त्र आदि सभी सामाजिक विज्ञान एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। एक-दूसरे के सहयोग से ही किसी सामाजिक विज्ञान को सही ढंग से समझा जा सकता है। अध्ययन की इसी पद्धति को ही अन्तर अनुशासनीय दृष्टिकोण कहते हैं। आर्थर बेंटले, मैक्स वेबर, मोस्का, ईस्टन, लासवेल, राबर्ट ए. डहल, आमण्ड पॉवेल जैसे आधुनिक विचारकों ने अन्तः अनुशासनात्मक दृष्टिकोण पर विशेष बल दिया है। सभी सामाजिक विज्ञान एक-दूसरे से सम्बन्धित होने के कारण एक के अभाव में दूसरे का अध्ययन या पूर्ण ज्ञान सम्भव नहीं है इसलिए राजनीति विज्ञान का अध्ययन भी पृथक रूप से नहीं किया जा सकता है।

(2) ~~सामाजिक~~

राजनीति विज्ञान एवं समाजशास्त्र

समाजशास्त्र राजनीति विज्ञान की जननी है → समाजशास्त्र सभी सामाजिक विज्ञानों की जननी है। राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास, नीतिशास्त्र आदि की उत्पत्ति भी समाजशास्त्र से ही हुई है। समाजशास्त्र सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक आदि मनुष्य के सभी पहलुओं का अध्ययन करता है। यह एक पृथक विज्ञान नहीं है, बल्कि एक ज्ञान का भण्डार है जिसमें अनेक शास्त्रों का समावेश है। इसलिए समाजशास्त्र सभी विज्ञानों की जननी है।

समाजशास्त्र राजनीति विज्ञान का आधार है – राजनीति विज्ञान समाजशास्त्र की एक शाखा है। राजनीति विज्ञान समाजशास्त्र से ही राज्य, सरकार, राजनीतिक सत्ता, सम्प्रभुता, राजनीतिक संस्थाओं का ज्ञान प्राप्त करता है। राजनीति विज्ञान इन्हीं मूल विषयों को अपना कर राजनीतिक सिद्धान्तों की खोज करता है।

दूसरी ओर राजनीति विज्ञान भी समाजशास्त्र को ~~सहायता प्रदान~~ सहायता प्रदान करता है। राज्य कानून, न्याय, राजनीतिक आदर्श आदि की जानकारी राजनीति विज्ञान से ही प्राप्त होता है।

कैटलिन के शब्दों में – "राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र अखण्ड है अथवा एक ही तस्वीर के दो पहलू हैं।" हालांकि समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र राजनीति विज्ञान से अधिक विस्तृत है। क्योंकि राजनीति विज्ञान में केवल राज्य द्वारा बनाए गए कानूनों का अध्ययन करता है, जबकि समाजशास्त्र रीति, रिवाजों, प्रथाओं, परम्पराओं एवं धार्मिक ~~नियम~~ नियमों का भी अध्ययन करता है।

– राजनीति विज्ञान केवल संगठित समुदायों का अध्ययन करता है जबकि समाजशास्त्र संगठित एवं असंगठित दोनों समुदायों का।

राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध मुख्यतः राजनीतिक समुदायों से है।
- राजनीति विज्ञान मनुष्य का अध्ययन एक नागरिक के रूप में करता है। समाज राज्य से प्राचीन है। राजनीति राज्य के उनके नियमों का उल्लंघन करने वालों को दण्ड की भी व्यवस्था है जबकि समाज में नहीं। अन्तर होने के बावजूद दोनों शास्त्रों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। सभी राजनीति विज्ञान की उत्पत्ति समाजशास्त्र से ही होती है तथा वह अपनी विषय सामग्री के लिए समाजशास्त्र का ऋणी है।
- राजनीति विज्ञान का इतिहास से सम्बन्ध — इतिहास क्रमिक विकास का विवरण प्रस्तुत करने वाला मानव समुदाय के विकास की कहानी है। सीले के अनुसार "राजनीति विज्ञान के बिना इतिहास एक ऐसे वृक्ष के समान है, जिसमें कोई फल नहीं लगता और इतिहास के बिना राजनीति शास्त्र जड़रहित वृक्ष के समान है।"
- सर्वप्रथम, राज्य एवं राजनीतिक संस्थाएं इतिहास की देन हैं। प्राचीन काल में राज्य का स्वरूप क्या था? वर्तमान में क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर इतिहास के माध्यम से ही प्राप्त किया जाता है।
इतिहास राजनीति विज्ञान के भावी आदर्शों एवं सिद्धान्तों को निर्धारित करता है।
इतिहास, भूत, ~~भविष्य एवं~~ वर्तमान एवं भविष्य के साथ एक सूत्र स्थापित करता है और राजनीति विज्ञान के विद्वानों के विचार निर्धारण को विकसित होने में मदद मिलती है।
इतिहास राजनीति विज्ञान का शिक्षक है क्योंकि इतिहास में कुछ सफलता एवं असफलताओं की जानकारी प्राप्त होती है।
साथ ही राजनीति विज्ञान इतिहास को विचारमय तथा गम्भीर बनाने का कार्य करता है। अतः राजनीति विज्ञान इतिहास एवं राजनीति के बीच कड़ी का काम करता है।
अतः दोनों के बीच अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। किन्तु फिर भी दोनों विषय एक ही है। इतिहास भूतकाल की राजनीति है अथवा राजनीति वर्तमान इतिहास है। दोनों के उद्देश्य, क्षेत्र में मौलिक अन्तर है।
- राजनीति विज्ञान का अर्थशास्त्र से सम्बन्ध — अर्थशास्त्र अन्य सामाजिक विज्ञान की तरह एक अलग विज्ञान है जो मनुष्य के आर्थिक जीवन से सम्बन्धित होता है। एडम स्मिथ के अनुसार, अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है जिसका सम्बन्ध मनुष्य के जीवन एवं उनके कार्य कलापों से है।
राजनीति विज्ञान और प्राचीन काल में अर्थशास्त्र को राजनीति विज्ञान ही माना जाता था। कौटिल्य ने भी अपने 'अर्थशास्त्र' में सेना, मुद्रा कर, न्याय, शक्ति का अध्ययन एक साथ किया।
- सर्वप्रथम, इन दोनों का एक ही उद्देश्य है — मानव कल्याण।
राजनीति विज्ञान राजनीतिक संगठनों का अध्ययन करता है, वहीं अर्थशास्त्र उन संगठन की आर्थिक नींव। राजनीति विज्ञान सामाजिक हित का अध्ययन करता है तो दूसरी ओर अर्थशास्त्र उनके आधार हित का।
आर्थिक परिस्थितियाँ राजनीति की दिशा निर्धारित करता है। सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन का मूल आर्थिक परिस्थितियाँ ही है।

राज्य का स्वरूप, संगठन, संविधान इत्यादि पर आर्थिक शक्तियों का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। राजनीतिक असंतोष का मूल कारण आर्थिक असंतोष ही होता है।

आर्थिक स्थिति के अनुसार ही सरकार या शासनतन्त्र की रूपरेखा निर्धारित होती है जैसे - कृषि युग, औद्योगिक युग की रूपरेखा। आर्थिक परिस्थितियाँ विधि निर्माण में भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं। राज्य का स्थायित्व भी उसके नागरिकों के आर्थिक परिस्थितियों पर ही निर्भर करती है।

दूसरी ओर समाज के आर्थिक परिस्थितियों को नियमित करने का दायित्व राज्य पर ही होता है। लोक कल्याणकारी राज्य एवं प्रजातन्त्र में राज्यों में राज्य व्यक्तियों के आर्थिक विकास पर विशेष ध्यान केन्द्रित करता है।

आर्थिक संरचना के अनुसार राजनीतिक संरचना में परिवर्तन होता है। राज्य आर्थिक समस्या जैसे - बेरोजगारी का निदान, कृषि का विकास इत्यादि का निराकरण राजनीतिक स्तर से ही होता है।

अतः दोनों में गहरा सम्बन्ध स्पष्ट है किन्तु इन दोनों में कुछ अन्तर भी है —

राजनीति विज्ञान का अध्ययन एक आदर्शात्मक विज्ञान है अर्थात् यह नैतिक एवं आध्यात्मिक पहलू को शामिल है जबकि अर्थशास्त्र एक वर्णनात्मक (Descriptive) विज्ञान है। यह नैतिकता एवं आदर्श से परे है। अर्थशास्त्र मनुष्य के आर्थिक जीवन का अध्ययन है, जबकि राजनीति विज्ञान राजनीतिक जीवन का अध्ययन है।

राजनीति विज्ञान का मनोविज्ञान से सम्बन्ध - अनेक विद्वानों ने रा० वि० एवं मनोविज्ञान के अध्ययन को एकीकृत करना चाहा है। बेजहॉट ने भी अपनी रचना 'फिजिक्स एण्ड पॉलिटिक्स' में मनोवैज्ञानिक सूत्रों की सहायता से राजनीति मुद्दों का वर्णन करने का प्रयास किया। बेजहॉट के विचार में मनोविज्ञान भौतिकी ही है। इसी प्रकार ग्राहम वालास ने अपनी पुस्तक 'Human nature in Politics' में मनोवैज्ञानिक आधारों पर उपर्युक्त राजनीति का अध्ययन प्रस्तुत किया। यह विचार इतना लोकप्रिय हुआ कि "राजनीतिक मनोविज्ञान" नामक एक नई शाखा उभरी। मनोविज्ञान मनुष्य की मानसिक क्रियाओं एवं उसके बाहरी व्यवहारों का अध्ययन करता है। राजनीतिक संस्कृति का निर्माण भी मनोवैज्ञानिक तत्वों से होता है।

मनोविज्ञान के विषय में वार्ड ने कहा है 'मनोविज्ञान व्यक्ति के अनुभव का विज्ञान है।' इसी प्रकार मनोविज्ञान का सम्बन्ध मनुष्य के व्यवहार से है, जो राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक या अन्य भी हो सकता है।

— मनोविज्ञान राजनीति विज्ञान का आधार है — मनोविज्ञान के बिना राजनीति विज्ञान का अध्ययन अधूरा है। मनुष्य की प्रवृत्तियों, विचारों भावनाओं के आधार पर ही राजनीतिक संस्थाएँ स्थापित की जाती हैं। दूसरी ओर राजनीतिक संस्थाओं के

- आदर्श राज्य की कल्पना नैतिक मान्यताओं पर ही सम्भव है। व्यक्तिगत क्रियाओं का सम्बन्ध रा० वि० से नहीं है किन्तु जब उन क्रियाओं का प्रभाव दूसरों पर पड़ता है तो वह विषय रा० वि० का भी हो जाता है नीतिशास्त्र किसी देश के संविधान को भी प्रभावित करता है जैसे आयरलैण्ड एवं भारत के संविधान ने नीति निर्देशक तत्व राजनीति विज्ञान का विषय अधिकार - कर्तव्य भी नीतिशास्त्र से सम्बन्धित है।

हालांकि दोनों में कुछ भिन्नता भी है —

राजनीति विज्ञान एक वर्णनात्मक तथा व्यवहारिक विज्ञान है जबकि नीतिशास्त्र एक आदर्शात्मक तथा सैद्धान्तिक विज्ञान है। रा० वि० मनुष्य के राजनीतिक पहलू का अध्ययन करता है जबकि नीतिशास्त्र नैतिक पहलू का। रा० वि० मनुष्य के बाह्य पहलू से सम्बन्धित है जबकि नीतिशास्त्र आन्तरिक पहलू से। रा० वि० का सम्बन्ध मूर्त एवं प्रत्यक्ष विषयों से है जबकि नीतिशास्त्र का सम्बन्ध सिर्फ अमूर्त एवं अप्रत्यक्ष विषयों से है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ये सभी शास्त्र एक - दूसरे से सम्बन्धित है। एक दूसरे के सहयोग से ही सामाजिक विज्ञान को समझा जा सकता है। इनमें से किसी का भी अध्ययन या पूर्ण ज्ञान एक दूसरे के अभाव का सबों का अध्ययन पृथक सम्भव नहीं है। इन सबों ~~पृथ~~ पृथक सम्भव नहीं है।

—